



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का महिलाओं के स्वास्थ्य में भूमिका

रविन्द्र सुमन

शोध छात्र

समाजशास्त्र विभाग, ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा।

" कोई समुदाय कोई देश और अंततः समूचा विश्व, उसी अनुपात में मजबूत होता है जिस अनुपात में उनके यहां इनमें रहने वाली महिलाओं का स्वास्थ्य बेहतर होता है।" मिशेल ओबामा

सारांश :

किसी भी देश के विकास के संदर्भ में पहली प्राथमिकता जन-स्वास्थ्य को दी जानी चाहिए। क्योंकि जान है तो जहान है और स्वास्थ्य है तो ही जान है। जन स्वास्थ्य के मामले में महिला सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। देश की कुल जनसंख्या का बहुत बड़ा प्रतिशत महिला बनते हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय की रिपोर्ट के अध्ययनों से पता चला है कि आमतौर पर महिलाएं और खासतौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को स्वास्थ्य सेवाओं का फायदा उठाने के लिए अब भी कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है जिससे स्वास्थ्य संबंधी अच्छी तौर-तरीकों पर अमल नहीं कर पाती है और परिणामस्वरूप अगली पीढ़ी में भी इनकी नींव नहीं पड़ पाती। ग्रामीण क्षेत्रों में काफी बड़ी संख्या में महिलाओं को स्वास्थ्य सेवाएं सुलभ नहीं है। शिशु और मां का स्वास्थ्य और उनकी उत्तरजीविता से सामाजिक विकास की समूची रूपरेखा स्पष्ट हो जाती है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने आम महिलाओं खासतौर पर ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए कई कदम उठाए हैं और पहल की है।

परिचय :

स्वास्थ्य मानव संसाधनों के विकास और जीवन की गुणवत्ता और बदले में राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए एक आवश्यक है। जनसंख्या के स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार को सामाजिक विकास का सूचक माना गया है। इसके अलावा, स्वास्थ्य को व्यक्ति, समुदाय और राष्ट्रीय स्तर पर सतत् विकास

हस्तक्षेपों के लिए प्राथमिकता माना जाता है। किसी देश की महिला आबादी के स्वास्थ्य का बच्चों के स्वास्थ्य और शिक्षा और घरों की आर्थिक भलाई के साथ-साथ स्वयं महिलाओं के लिए भी गहरा प्रभाव पड़ता है।

भारत में महिला स्वास्थ्य का एक सिंहावलोकन

भारत का लिंगानुपात तेजी से पुरुषों के अनुकूल हो गया है। भारत में, अधिक महिला मृत्यु दर 30 वर्ष की आयु तक बनी रहती है – महिलाओं के प्रति पूर्वाग्रह का एक लक्षण है, लेकिन राज्यों के बीच और राज्यों के भीतर ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच प्रजनन और मृत्यु दर में व्यापक असमानताएं हैं।

महिला मृत्यु दर और रुग्णता के आयाम

यद्यपि पिछले दो दशकों में युवा बाल मृत्यु दर में उल्लेखनीय गिरावट आई है। भारत में कुल मौतों में से 30 प्रतिशत से अधिक 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में होती हैं और उनके जन्मजात जैविक लाभों के बावजूद लड़कों की तुलना में अधिक लड़कियों की मृत्यु होती है। पिछले एक दशक के दौरान युवा लड़कों और लड़कियों की मृत्यु दर के बीच की खाई और भी चौड़ी हो गई है।

मातृ मृत्यु दर का अनुमान 437 मातृ मृत्यु प्रति 100,000 जीवित जन्मों में मुख्य रूप से संक्रमण, रक्तस्राव, एक्लम्पसिया, बाधित श्रम, गर्भपात और एनीमिया से होता है। गर्भावस्था और बच्चे के जन्म के दौरान उचित देखभाल की कमी, और विशेष रूप से जटिलताओं का पता लगाने और प्रबंधन के लिए सेवाओं की अपर्याप्तता, अधिकांश भौतिक मृत्यु की व्याख्या करती है। आयरन की कमी से होने वाला एनीमिया भारतीय लड़कियों और महिलाओं में व्यापक है और 50 से 90 प्रतिशत गर्भवती महिलाओं को प्रभावित करता है।

भारतीय महिलाओं का खराब स्वास्थ्य राष्ट्रीय और व्यक्तिगत दोनों स्तरों पर चिंता का विषय है। यह उन बच्चों को प्रभावित करता है जो भारत के नागरिकों और श्रमिकों की अगली पीढ़ी होंगे। यह न केवल घरेलू स्तर पर बल्कि अनौपचारिक और औपचारिक आर्थिक क्षेत्रों में भी उत्पादकता को कम करता है। महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार सामाजिक और आर्थिक विकास का अभिन्न अंग है।

स्वास्थ्य का सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ

भारत में महिलाओं की प्रतिकूल स्थिति को घरेलू संसाधनों के आवंटन में भेदभाव से देखा जा सकता है, जैसे कि भोजन, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा की पहुंच के साथ-साथ कम उम्र में शादी। महिलाओं का शैक्षिक स्तर और उनके स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार आपस में जुड़े हुए हैं और इसलिए महिला शिक्षा में वृद्धि उनके स्वास्थ्य में सुधार की कुंजी है।

महिलाओं को शादी करने के लिए दहेज की आवश्यकता होती है इसलिए आमतौर पर बेटियों को शुद्ध दायित्व माना जाता है। परिणाम पुत्रों के लिए एक मजबूत वरीयता है। अपने सबसे चरम रूप में, यह वरीयता कन्या भ्रूण हत्या और हाल ही में लिंग-चयनात्मक गर्भपात की ओर ले जाती है। बेटों के लिए वरीयता स्पष्ट रूप से महिला बच्चों की सापेक्ष उपेक्षा में स्पष्ट है, जो पुरुषों की तुलना में पहले दूध छुड़ाती हैं, कम मात्रा में पौष्टिक भोजन प्राप्त करती हैं और कम चिकित्सा देखभाल प्राप्त करती हैं, और स्कूल से निकाले जाने की अधिक संभावना होती है। यह असमान व्यवहार महिलाओं के वयस्क जीवन में जारी है। महिलाएं पुरुषों के बाद

खाती हैं, और गर्भावस्था के दौरान भी उनका आहार आमतौर पर अपर्याप्त होता है। महिलाओं के एक उच्च अनुपात को बीमारियों का कोई इलाज नहीं मिलता है। कई लोग घरेलू उपचार या पारंपरिक उपचार का उपयोग करते हैं, जबकि पुरुषों को आधुनिक चिकित्सा और संस्थागत देखभाल प्राप्त करने की अधिक संभावना होती है।²

महिलाओं का दैनिक कार्यभार:

ग्रामीण महिलाएं अक्सर एक साथ कई कार्य करती हैं। अधिकांश ग्रामीण महिलाओं को घर पर खाना पकाने, बच्चों की देखभाल, कपड़े और बर्तन धोने, घर की सफाई, ईंधन और पानी लाने, मिट्टी का फर्श, पशु पालन और अन्य कई तरह के कामों के प्रबंधन का विशेष बोझ उठाना पड़ता है। फिर से उन्हें सामाजिक समारोह, धार्मिक कार्यों और रिश्तेदारों के घर समय पर जाना पड़ता है। तो इस तरह के दिन-प्रतिदिन के काम के लिए उसे पूरे दिन व्यस्त रहना पड़ता है। चूंकि वह अपने संयुक्त परिवार में मां, पत्नी और ससुराल है, इसलिए उसे भोजन से लेकर कपड़े तक परिवार के सभी सदस्यों का ध्यान रखना पड़ता है। सुबह से रात तक महिला सदस्यों को अपने काम में व्यस्त रहना पड़ता है।³

इस प्रकार के उच्च घरेलू कार्यों से महिलाओं के स्वास्थ्य की स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जिससे श्वसन संबंधी समस्याएं, पाचन संबंधी समस्याएं, त्वचा की समस्याएं, पीठ दर्द, शरीर में दर्द, सिर दर्द, सर्दी, खांसी, दस्त पेचिश, आंखों की रोशनी कमजोर होना, थकावट सहित गंभीर बीमारी होती है। चक्कर आना, थकान, ट्यूबरक अल्सर, अल्सर, ट्यूमर, हृदय रोग आदि। गांवों में भी यही स्थिति है जहां महिलाओं को पीठ दर्द, बदन दर्द, सिर दर्द और सर्दी-खांसी जैसी बीमारियां हैं।

घर के अंदर हवा की प्रकृति जीवन की गुणवत्ता और सामान्य रूप से जनसंख्या के कल्याण को प्रभावित करती है। विभिन्न इनडोर प्रदूषकों के संपर्क में आने से मुख्य रूप से श्वसन प्रणाली को प्रभावित करने वाली विभिन्न बीमारियों के विकसित होने का खतरा बढ़ जाता है। वर्तमान में लोग अपना अधिकांश समय इमारतों, घर, कार्यस्थल या स्कूल में काम करने में बिताते हैं, जहां वे घर के अंदर मौजूद हवा की गुणवत्ता के आधार पर प्रभावित हो सकते हैं।

हमारे देश में घर पर रहने वाली युवतियां इस तथ्य के कारण संकट में हैं कि वे विभिन्न इनडोर प्रदूषकों के लगातार संपर्क में हैं, विशेष रूप से गृहिणियां जो घर के अंदर और बाहर अपने कर्तव्यों में लगातार व्यस्त रहती हैं। वर्तमान चरण में, जहां एकल परिवार अधिक हैं। घरेलू कार्यों में उनके द्वारा बिताया गया समय काफी अधिक होगा। घर में अधिक काम के साथ, घरेलू काम में शामिल युवतियां घर के अन्य सदस्यों के वयस्कों के अनुपात में अधिक हवा में सांस लेती हैं।

विकसित देशों में ईंधन के स्रोत गैस और बिजली जैसी सामग्रियों का उपयोग करके स्वच्छ होते हैं। यहां इनडोर वायु प्रदूषण की समस्याएं मुख्य रूप से नाइट्रोजन डाइऑक्साइड, तंबाकू के धुएं से उप-उत्पादों, वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों और अन्य रासायनिक यौगिकों जैसे यौगिकों से होती हैं। इसके अलावा ऊर्जा के संरक्षण और निरंतर इनडोर तापमान को बनाए रखने के लिए इमारतों की खिड़कियां नहीं खोली जाती हैं। नतीजतन, वर्तमान में अच्छे इन्सुलेशन वाले भवनों को डिजाइन करने का चलन है।⁴

शोध साहित्य सामग्री की समीक्षा

डॉ० यदुवीर यादव (2020)¹, ने राजस्थान में महिलाओं के सशक्तिकरण में उज्जवला योजना का अध्ययन किया तथा योजना के महत्वता एवं इसके वितरण पर भी प्रकाश डाला है। इन्होंने अपने शोध में 200 महिला लाभार्थियों को निदर्शन के रूप में चयनित किया है। जिन्हें श्रेणीबद्ध करके जनसांख्यिकीय, वैवाहिक स्थिति, धर्म, जाति एवं उनके व्यवसाय से संबंधित डाटा भी एकत्रित किया। इन्होंने अपने अध्ययन में महिलाओं की उनकी आय स्तर (प्रतिवर्ष) के आधार पर भी वर्गीकृत किया। अध्ययन में मुख्य रूप से परामपरागत इंधनों पर खाना पकाने के समय महिलाओं को होने वाली समस्याओं के बारे में भी बात की है। इसके अलावा कुछ महत्वपूर्ण मुद्दे घरेलू प्रदुषण, उनके स्वास्थ्य तथा पर्यावरण प्रदुषण एवं परामपरागत इंधनों के उपयोग से होने वाली बीमारियों तथा इस योजना के कमियों पर प्रकाश डाला है। इन्होंने अपने अध्ययन में एनोवा टेबल का प्रयोग करके प्राप्त डाटाओं का विश्लेषण किया।

राहुल रंजन (2020)² इन्होंने उड़ीसा के अध्ययन में परामपरागत ईंधन तथा एलपीजी के बीच तुलना करके इसके महत्व को समझने का प्रयास किया है। शोध में पाया वर्ष 2016–2017 में एलपीजी की खपत में 9.64 : बढ़ोतरी हुई तथा 2017–2018 में एलपीजी की खपत में 6.8: बढ़ोतरी हुई इन्होंने यह बताया कि 2019 तक एलपीजी कनेक्शन बढ़कर 43.2 मिलियन तक पहुँच गया। इन्होंने ग्रामीण परिवारों को आसानी से जलाऊ लकड़ी प्राप्त हो जाने पर भी प्रकाश डाला है, परामपरागत ईंधन की उपलब्धता के कारण वर्तमान समय में भी एलपीजी को अपनाने में अधिक समय लग रहा है। इनके अनुसार इन्होंने आर्थिक नीति को ग्रामीण अर्थव्यवस्था में श्रय बाजार की गतिशीलता के साथ जोड़ देना चाहिए। यदि लोग एलपीजी के अपेक्षा पारंपरिक इंधन के प्रति अधिक जागरूकता दिखाये तो ऐसे स्थिति में ओडिशा खनन निगम की काफी भारी नुकसान हो सकती है।

बालमुरुगन, रोहित और के. आर. रेडी (2021)³ इन्होंने अपने अध्ययन में बताया है कि गाँवों में अनेक प्रकार की समस्या विद्यमान रहती हैं जिनमें अच्छी शिक्षा, सड़कों, बिजली की कमी आदि आते हैं लेकिन इन समस्याओं में एक यह भी प्रमुख समस्या है कि ग्रामीण लोगों को स्वच्छ इंधन आसानी से नहीं प्राप्त होते हैं। वे खाना पकाने खाना हेतु पारंपरिक इंधनों का उपयोग करते हैं। कई ग्रामीण महिलाओं के पास अपने परिवार और बच्चों के साथ बिताने के लिए समय नहीं बच पाता था क्योंकि उसे जलाऊ लकड़ी इकट्ठा करने और भोजन बनाने में ही अधिकांस समय व्यतीत हो जाता था। इस जलाऊ लकड़ी पर खाना पकाने के दौरान निकलने वाला धुँआ फेफड़ों में जलन, सूजन, फेफड़ों के कैंसर, हृदय रोग और आँखों में जलन जैसी बीमारी को जन्म देती है परन्तु इस योजना ने महिला को अपने बच्चों और परिवार के साथ अधिक समय बिताने में मदद किया। यह अनेक समस्याओं तथा बीमारियों से बचाव करता है।

पियुष द्विवेदी (2020)⁴ इन्होंने अपने शोध में पाया कि परंपरागत इंधनों पर खाना पकाने के अपेक्षा एलपीजी पर खाना पकाना अधिक उचित है। इससे महिलाओं की जिन्दगी में बदलाव आया है। तथा इन्हें प्रत्यक्ष रूप से अनेक प्रकार लाभ मिला है। इस योजना के पहले उन्हें अत्यधिक काम हो जाते थे। खाना

पकाने हेतु ईंधन संग्रह करना फिर खाना पकाने में अत्यधिक समय लगना जैसी समस्याएँ आ जाती थी परन्तु अब महिलाओं के दैनिक जीवन में काफी सुधार आया है।

अधिकतर महिलाएँ मिट्टी के चूल्हे पर जलावन को जलाकर भोजन बनाती थी। लकड़ियों के जलने से हमारा वातावरण धुँए की चपेट में आने से प्रदुषित होता था, तो दुसरी तरफ धुँए के कारण महिलाएँ अनेक तरह की बीमारियों की चपेट में आती थी। धुँए से हाने वाले बीमारियों आँख संबंधित समस्या, हृदय संबंधित समस्या, फेफड़े संबंधित समस्या इत्यादि। घरों के भीतर जीवाश्म ईंधन के उपयोग से घर में वायु प्रदुषित हो जाती थी जिसके कारण तीव्र श्वास संबंधित बीमारी उत्पन्न होती थी। हमारे देश के अधिकांश महिलाओं के जीवन धुँए के साये में गुजरता था। विशेषज्ञों के अनुसार घरों में खुली आग जलाना प्रति 400 सिगरेट की धुँए के समान है। अर्थात् बिना किसी प्रकार का नशा किए हुए हमारे देश की अनेक महिलाएँ प्रतिदिन 400 सिगरेट के धुँए को ग्रहण कर रही थी। **डब्ल्यू एच ओ** ने जारी किया है कि भारत जैसे राष्ट्र में सलाना 500 महिलाओं की जान सिर्फ अस्वच्छ ईंधन पर खाना बनाने से होता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के रिकॉर्ड के अनुसार, लगभग 300 करोड़ लोग खुली आग और लकड़ी, जानवरों के गोबर, फसल के कचरे और कोयले को जलाने वाले स्टोव का उपयोग करके भोजन तैयार करते हैं। बायोमास ईंधन के साथ खाना पकाने से घरेलू वायु प्रदूषण से संबंधित बीमारी से 40 लाख से अधिक लोग समय से पहले मर जाते हैं। बहुत सारे अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि घरेलू वायु प्रदूषण के संपर्क में आने से बच्चों और वयस्कों में गंभीर बीमारियों के परिणाम हो सकते हैं। जीर्ण श्वसन रोग जैसे निमोनिया, क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज, फेफड़े का कैंसर, हृदय रोग, स्ट्रोक और मोतियाबिंद। घरेलू वायु प्रदूषण के संपर्क में आने का सुझाव देने वाले साक्ष्य भी प्रतिकूल गर्भावस्था के परिणामों, तपेदिक, ऊपरी वायु-पाचन तंत्र के कैंसर, ग्रीवा और अन्य कैंसर से जुड़े हैं।

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना और महिला स्वास्थ्य

सरकार द्वारा पिछले कुछ वर्षों में किए गए प्रयासों से ग्रामीण क्षेत्रों में हालात काफी बेहतर हुए हैं। विभिन्न योजनाओं से उम्मीद बंधी है कि शीघ्र ही समूचे ग्रामीण स्वास्थ्य के लक्ष्यों को पा लेगी लेकिन सरकार के प्रयासों से कहीं अधिक आवश्यक है कि जन-सहभागिता तथा लोगों की सोच और व्यवहार में परिवर्तन।

अस्वच्छ रसोई के चूल्हों से घर के अंदर होने वाले प्रदूषण का महिलाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधि 2019 टाइम यूज इन इंडिया सर्वेक्षण में पाया गया कि केवल 6.1 प्रतिशत पुरुष खाना पकाने में भाग लेते हैं, जबकि लगभग सभी ग्रामीण महिलाएं खाना पकाने, सफाई और देखभाल करने जैसे अवैतनिक श्रम का काम करती हैं, औसतन लगभग साढ़े छह घंटे।

इसका मतलब है कि महिलाएं चूल्हे से आने वाले प्रदूषण से कहीं ज्यादा प्रभावित हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) का अनुमान है कि फसल के कचरे, गोबर, लकड़ी का कोयला और कोयले जैसे ठोस ईंधन का उपयोग करके घर के अंदर खाना पकाने के कारण होने वाला वायु प्रदूषण हर साल 4.3 मिलियन अकाल मौतों के लिए जिम्मेदार है। इंस्टीट्यूट फॉर हेल्थ मेट्रिक्स एंड इवैल्यूएशन इस संख्या को 1.6 मिलियन रखता है। भारत में, इनडोर वायु प्रदूषण के कारण अनुमानित मृत्यु दर प्रति 100,000 में 51.03 अकाल मृत्यु है।

जब लोगों के पास बायोगैस, इथेनॉल, प्राकृतिक गैस और बिजली जैसे स्वच्छ खाना पकाने के ईंधन तक पहुंच होती है, तो इनडोर वायु प्रदूषण से होने वाली मौतों में तेजी से गिरावट आती है। 2016 में, भारत के 40 प्रतिशत से अधिक निवासियों के पास इन स्वच्छ खाना पकाने के ईंधन तक पहुंच थी – हालांकि यह एक दशक पहले केवल 26 प्रतिशत से बहुत अधिक वृद्धि थी।

ऐसा कहा जा सकता है कि सरकार द्वारा जो भी महिलाओं से संबंधित योजनाओं को प्रारंभ किया गया है उनमें उज्ज्वला योजना सफलतम योजनाओं में से एक है। इस योजना का प्रारंभ हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा 1 मई 2016 को बलिया जिला में किया गया, जो उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित है। उज्ज्वला योजना का हमारे पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन पर विभिन्न क्षेत्रों में साकारात्मक प्रभाव पर रहा है जो किसी भी समाज एवं राष्ट्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। उज्ज्वला योजना से महिलाओं के स्वास्थ्य काफी प्रभावित हुआ है। धुएं से होने वाले अनेक बीमारियों से मुक्ति दिलाई है जिससे उन्हें सशक्तिकरण में बढ़ावा मिला। यह योजना महिलाओं की जिंदगी को ही बदल डाला है एवं उसे खुशहाल जिंदगी प्रदान की इस तरह यह योजना महिलाओं की खुशहाल जिंदगी प्रदान किया है। इससे सिर्फ बीपीएल परिवार के महिलाओं का स्वास्थ्य ही नहीं ठीक हुआ है, बल्कि एक बेहद स्वच्छ पर्यावरण का निर्माण हुआ है।

प्रारंभ में सिर्फ 5 करोड़ मुक्त कनेक्शन की बात कही गई थी परन्तु योजना की सफलता को देखते हुए सरकार ने इसे 5 करोड़ से बढ़ाकर 8 करोड़ करने का निर्णय लिया तथा सफलता पूर्वक वितरण भी किया। इस योजना को विश्व की सबसे बड़ी प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण योजना के रूप में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड में भी सम्मिलित किया जा चुका है।

निष्कर्ष

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना गरीब लोगों के सामाजिक समावेश की दिशा में एक बड़ा कदम है। महिलाओं को अशुद्ध ईंधन एकत्र करने और उपयोग करने के कठिन परिश्रम से बचाया जाता है और एलपीजी के माध्यम से खाना पकाने के आसान और तेज तरीके के कारण उन्हें अन्य गतिविधियों के लिए अपने निपटान में अधिक समय मिल रहा है। वायु प्रदूषण कम होने, स्वच्छ पर्यावरण और स्वस्थ समाज के कारण पूरे देश को लाभ हो रहा है।

संदर्भ ग्रंथ

Yadav, Y. (2020). Women Empowerment through Pradhan Mantri Ujjwala yojana (PMUY) Scheme in Rajasthan : A Study on Rural Households in Selected Region. Australian Journal of Managemet

Ranjan, R. (2020). Household Cooking Fuel Patterns in Rural India: Pre-and Post Pradhan Mantri Ujjwala Yojana

J Balamurugan Kambu Rohit, K R Eswar Reddy Surisetty Varun Sai "Pradhan Mantri Ujjwala Yojana and its Impact on Life of Rural Women" : Journal of Social Welfare and Management

Voume 13 Number 4, October-December 2021Devi, R. (2017). Pradhan Mantri Ujjwala Yojana :

Issues and challenges. International Journal Of Academic Research and Development, 2, 705-706.

Anand. V. (28 May 2018). Two Years of Ujjwala Yojana: Dalits in Western U.P. land benefits resentment against centre on other issues. First Post

Ahmad, N., Sharma, S., & Singh, D. A. K. (2018). Pradhan Mantri Ujjwala(PMUUY) step towards social inclusion in India. INT. J. Trend Res. Dev, 5, 46-49.

Pandey, K. et al (3 Feb 2018). Ujjwala Scheme : Are cleaner cooking fuels affordable and accessible? Down to Earth.

Kar, A., & Zerriffi, H. (2018). From cookstove acquisition to cooking transition: Framing the behavioral aspects of cookstove interventions. Energy Research and Social Science. (November 2017)

पियुष द्विवेदी (2020) "उज्जवला योजना : महिलाओं के स्वास्थ्य और समृद्धि की दिशा में रचनात्मक पहल" ए पत्र सूचना कार्यालय भारत सरकार (PIB)

